# पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
7(1) 203–204, 2020
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139620924732
http://bss.sagepub.in

**मनोहरन कार्तिक राम, 2019, *साहित्यिक/सांस्कृतिक सिद्धांतः फ्रांत्ज फैनॉनः आइडेंटिटी ऐंड रेजिस्टेंस, एलेन हिवाई* द्वारा सम्पादितः ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, 195, पृष्ठ xiii + 118ए आई.एस. बी.एन. 978-935287-6877**

समकालीन साहित्यिक और सांस्कृतिक सिद्धांतों में प्रमुख अवधारणाओं और सिद्धांतकारों की श्रृंखला के लिए संक्षिप्त और स्पष्ट परिचय प्रस्तुत करती है। श्रृंखला की प्रत्येक पुस्तक मानविकी और सामाजिक विज्ञान के छात्रों को सिद्धांत और सिद्धांतकारों के विस्तृत साक्षात्कारों को प्रस्तुत करती है, साथ ही उन्हें साहित्यिक/सांस्कृतिक ग्रंथों को पढ़ने की प्रक्रिया से भी परिचित कराती है।

साहित्यिक और सांस्कृतिक सिद्धांत की श्रृंखला की यह पुस्तक, फ्रांत्ज फैनॉन के विचार जो पहचान और प्रतिरोध की राजनीति पर केंद्रित हैं, के साथ एक आलोचनात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित करती है। यह फैनॉन के कार्य को रेखांकित करते हुए क्रांतिकारी मानवतावाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और अस्मिता की राजनीति के प्रति उनके दृष्टिकोण को, एक सुसंगत रूपरेखा प्रदान करता है। इस पुस्तक का एक भाग मनोहरन के शोध ''टू एक्सप्लेन द अदर टू माइसेल्फः फैनॉन, रामासामी ऐंड आइडेंटिटी पॉलिटिक्स'' पर आधारित है, जो 2015 में एसेक्स विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की उपाधि के लिए प्रस्तुत की गयी है।

इस भाग (खण्ड) में, मनोहरन ने फैनॉन के कार्य का परिचय प्रस्तुत किया है, जिसमें उसने विषेष रूप से फैनॉन के विचार को दृष्टिगत रखकर उत्पीड़न के प्रति प्रतिरोध की व्याख्या की है। वह 'द रैचिड ऑफ द अर्थ ' के साथ अपने अनुभव का वर्णन करता है, जिसने उनके क्रांतिकारी संदेश और हिंसा की वकालत को प्रभावित किया और उसके विचारों के उद्भव/मूल का अनुरेखण किया। मनोहरन ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए फैनॉन के प्रसिद्ध कार्यों को लेकर लघुतर कार्यों जैसे, ''टुवडर्स द अफ्रीकन रिवोल्यूशन'' एवं ''एलिएनेशन ऐंड फ्रीडम''जैसे कार्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

फैनॉन की 'अस्मिता की राजनीति' के प्रति अवधारणा जिस प्रकार मनोहरन ने व्यक्त किया है, उसी तरह दशकों पूर्व यह इहाब हसन द्वारा भी स्पष्ट की गई थी। फैनॉन की सोच में, दमन के विरोध में एककट्टरपंथी सिद्धांत जो कोई भी रूप ले सकता है, मूल रूप से निहित है। फैनॉन के कार्यों की सामान्य रूपरेखा और वर्तमान विवादों की व्याख्या समाप्त करने के बाद, अध्याय 3 में, मनोहरन के बारे में विचारों का आकलन किया है। मनोहरन का तर्क है कि, फैनॉन 'नेग्रिटीउड' के प्रति नस्लीय अंतर और टकराव संघर्ष के मुद्दे से निपटने के लिए एक आलोचना का विकास करता है, जो इसके आवश्यक

आधार की ओर इंगित करते हुए इसके अतीत से जुड़ी पौराणिक कथाओं और क्रांतिकारी शक्तियों की कमी को उल्लेखित करती है।

अंतिम दो अध्याय और निष्कर्ष मूल रूप से विषेष और अभिनव हैं। अध्याय 4, जातिवाद-विरोधी जातिवाद? फैनोनिस्ट स्टडी ऑफ एंटी-कास्ट पॉलिटिक्स, दक्षिण भारत में तमिलनाडु के कट्टरपंथी समाज सुधारक 'पेरियार' ई.वी. रामास्वामी के काम पर और फैनॉन के जाति व्यवस्था के प्रति विरोध पर विचार की चर्चा करता है। अध्याय 5 में कुर्द स्वायत्तता के लिए संघर्ष करने के संबंध में फैनॉन की सोच की चर्चा की गयी है। मनोहरन, कुर्दिष वर्कर्स पार्टी के लेखन पर आधारित एक मुक्ति आंदोलन का वर्णन करते हैं जो पहचान से बाध्य नहीं है, और सभी रूपों के उत्पीड़न सहित, वर्ग संरचना, धार्मिक अधिनायकवाद, संप्रदायिक, अंधराष्ट्रीयता और लिंग असमानता के खिलाफ काम करता है और इस प्रकार, यह आन्दोलन फैनॉन के विचारों के बेहद अनुकूल प्रतीत होता है। अंत में मनोहरन अंतरजातीय पोर्न और हाल ही में आई फिल्म 'ब्लैक पैंथर' को एक फैनोनियन परिप्रेक्ष्य के माध्यम से रेखांकित करते हैं जो प्रो-नेग्रिट्यू वैल्यूज को चुनौती देता है और पुनः से सार्वभौमिकता की आवश्यकता पर बल देते हैं जो पहचान की राजनीति से उत्कृष्ट हो।

यह पुस्तक समकालीन राजनीति और संस्कृति के विषलेषण में फैनॉन के विचारों की प्रासंगिक्ता को रेखांकित करती हुई उनके पुनर्पाठ की चुनौती हमारे सम्मुख उपस्थित करती है। यह पुस्तक फैनोन्यिन दृष्टिकोण का उपयोग कर नेग्रिटीउड आंदोलन, तमिलनाडु में पेरियार का जाति-विरोधी आंदोलन और मध्य-पूर्व में कुर्द संघर्ष की आलोचना करती है और समकालीन बहुसंस्कृतिवाद, विस्तारवादी पहचान की राजनीति और एक नई सार्वभौमिकता का विस्तार करने का तर्क देती है। पुस्तक प्रबलता से यह तर्क देती है कि अल्पसंख्यकों के संघर्ष, सार्वभौमिकता का मार्ग दिखाए बिना, उदार बहुसंस्कृतिवाद और दक्षिणपंथी विचारधाराओं के लिए सरल शिकार बन जाते हैं।

यह जाति के आलोक में फैनॉन को एक महत्वपूर्ण पुनः अध्ययन है। यह फैनॉन की राष्ट्रीय एवं नस्लीय पहचना की दुनिया यानी, एक नए मानवतावाद जहां जाति, जातीय और राष्ट्रीय सूक्ष्मतावाद का सामाजिक पतन हो वहाँ तक पहुंचने के लिए कम पड़ी है। मनोहरन के तर्क और गद्य (फैनॉन के जैसे ही) सरल और स्पष्ट हैं। प्रमाणिकता के लिए उनकी उत्सुकता भी फैनॉन का आभार व्यक्त करती है। रचनात्मक, सरल और स्पष्ट आलोचना हमें उन विशेष साहित्यों में वापस ले जाती है जिनके साथ हम शायद परिचित हों या न हों। उम्मीद है कि कार्तिक राम मनोहरन की फैनॉन के कार्य की चर्चा फैनॉन पाठकों के लिए एक नई लहर दिशा को प्रेरित करेगी।

**निर्दोषिता बिष्ट**
*शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग*
*कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल*
*(उत्तराखण्ड)-263001, भारत*
*ई-मेल: nirdoshitabisht17@gmail.com*